ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 217-221

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

भारतीय लोक कला – प्राचीन परम्परा से आज तक

1. मुश्ताक अली
2. डॉ0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येता– चित्रकला, 2. एसोसिएट प्रोफेसर– चित्रकला विभाग, एन0 ए0 एस0 कॉलेज, मेरठ समन्वयक– ललित कला विभाग चौ0 चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-20.06.2022, Revised-24.06.2022, Accepted-27.06.2022 E-mail: alimushtaqe1988@gmail.com

सारांशः – *भारत एक प्राचीन, सांस्कृतिक राष्ट्र है। यहां कला मानव संस्कृति की उपज है। इसका प्रारम्भ मानव की सौन्दर्य भावना का परिचायक है। भारत की कला परम्परा प्राचीनता और आधुनिकता में अनूठा समन्वय दिखाई देता है। लोक कला का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है तथा प्राचीन परम्परा से आज तक लोक कला अपना महत्व बनाए हुए है। इसी के साथ आगे भी निरन्तर गति से बढ़ रही है। कलाओं के अन्तर्गत चित्रकला, स्थापत्य कला, मूर्ति कला, लोक कला तथा हस्त कला एवं शिल्प कला प्रमुख हैं। इन सभी कलाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति की दृष्टि से भारत के जन–जीवन में न केवल प्रागैतिहासिक युग से अपितु वर्तमान में भी इसका विशेष महत्व दृष्टिगोचर होता है। मनुष्य का जीवन लोक कलाओं के बिना अधूरा है। यह व्यक्ति को बेहतर जीवन जीने की कला सिखाती है। जीवन में रंग भरने का काम करती है। यह मनुष्य की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है। लोक संस्कृति लोक कलाओं के द्वारा मनुष्य बेहतर मनुष्य बनाने के लिए उपयोगी है। लोक कला के बिना मनुष्य का जीवन नीरस है।*

कुंजीभूत शब्द– सांस्कृतिक राष्ट्र, मानव संस्कृति, सौन्दर्य भावना, परिचायक, चित्रकला, स्थापत्य कला, मूर्ति कला, लोक कला।

कला मानव संस्कृति की उपज है। कला मानव की सौन्दर्यात्मक भावना की परिचायक है। यहां की कला एवं अनूठा समन्वय दिखाई देता है। लोक कला परम्परागत कला का वह मूल या आवश्यक रूप है, जिसने अपने स्थाई प्रारूप को एक लम्बी अवधि से आज तक बनाए रखा अर्थात् (प्राचीन परम्परा से लेकर आज तक) जिसके कारण उसका स्वरूप सार्वभौमिक माना गया है।

प्राचीन परम्परा से लेकर वर्तमान काल तक इस सहज कला का सफलतापूर्वक देश, समाज व गृह की समृद्धि हेतु प्रयोग किया गया है। लोक कला आत्मिक शान्ति व मंगल भावनाओं से ओत–प्रोत कला है। भारतीय लोक कला हमारे देश की परम्पराओं, मान्यताओं, कथाओं, संस्कृति, तीर्थ, त्यौहारों, संस्कारों एवं शुभ कार्यों आदि पर आधारित होती है। लोक कला के आयाम जन्म से मृत्यु तक हमारे साथ जुड़े होते हैं। लोक कला मनोरंजन व जादू–टोना तथा अलंकरण आदि के रूपों में भी अपनाई जाती है।

लोक कला के विषय, माध्यम एवं तकनीक आदि की दृष्टि से कला के लिए एक महत्वपूर्ण अंग होती है। साथ ही हमें गर्व है कि भारतीय लोक कला दुनिया के अन्य राष्ट्रों की तुलना में हर दृष्टि से सबसे ज्यादा समृद्ध मानी जाती है। यही हमारे देश की लोक कला की पहचान है। इस प्रकार हम देखते हैं कि विभिन्न प्रकार की कलाओं में हमारे देश की लोक कला सर्वोपरि है, क्योंकि वह हमारे समाज से भावनात्मक एवं आस्था के रूप में घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है, जैसे पर्वतों में सुमेरू श्रेष्ठ है, पक्षियों में गरूड़ प्रधान है और मनुष्यों में राजा उत्तम है, उसी प्रकार कलाओं में लोककला श्रेष्ठ–श्रेष्ठतर मानी जाती है, जिस प्रकर सामाजिक रीति–रिवाजों में लोक कला का प्रभाव संस्कृति की रीढ़ की हड्डी की तरह मानव जीवन में बहुत महत्व रखती है।

भारत की अनेक जातियों व जन–जातियों में पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आ रही पारम्परिक कलाओं को लोक कला कहा जाता है। लोक कला जनसाधारण की सहज अभिव्यक्ति का रूप एवं सशक्त माध्यम है। यह आरम्भ से ही मानव सभ्यता के साथ–साथ धार्मिक विश्वासों, परम्पराओं एवं आस्थाओं के साथ पली–बढ़ी है। लोक कला अपने परम्परागत, विश्वासों, धार्मिक आस्थाओं व रहस्यात्मक संकेतों, ज्यामितीय आकारों, अतीत की प्रेरणाओं पर आधारित एक प्राचीन परम्परा रही है।

लोक कला की परम्परा प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत में अवाध गति से चली आ रही है। समय के साथ–साथ इसमें आमूल–चूल परिवर्तन भी होते चले आ रहे हैं। इसी के साथ आज समाज की लोक परम्परा, सभ्यता एवं भावना आदि का इतिहास क्रमबद्ध रूप में पाया जाता है। लोक कला को परम्परागत रूप से आगे बढ़ाने का श्रेय हमारे देश की ग्रामीण जनता को दिया जाता है, जिसके कारण इसे विश्वकला की प्रगतिशील भावनात्मक धारा के साथ लिया गया है और साथ ही इसने उस ओर प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया है।

कला मानव जीवन की सौन्दर्य अनुभूति के आदर्शों को प्रकट करती है, जैसे– मोहनजोदाड़ों एवं हड़प्पा से प्राप्त वस्तुओं से भी इसकी प्राचीनता के महत्व का पता चलता है। वैदिक काल से आज तक के युग की कला पर उस युग की छाप हमें आज भी देखने को मिलती हैं।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

लोक कला जन सामान्य के लिए परम्परागत धार्मिक भावना के रूप में विकसित हुई है। कलाओं की उन्नति एवं विकास में लोक कला का भी बहुत महत्व है। कलाओं का विकास राजाओं के दरबारी आश्रयों में व्यवसायी कलाकारों के द्वारा होता है, परन्तु लोक कला का विकास साधारण जनता के घरों, जन–मानस प्रसिद्धि के सरल शान्त स्वाभाविक रूप में धार्मिक तथा सांस्कृतिक एवं पारिवारिक रूढ़ियों तथा परम्पराओं के साथ–साथ बौद्धिकता के बिना ही निरन्तर होता चला आ रहा है। भारत की सांस्कृतिक विरासत में लोक कला अपनी गतिविधियों एवं विभिन्न रूपों में अनगढ़ होते हुए भी सौन्दर्यात्मकता के साथ ही भौतिक सत्ता की महत्ता को अभिव्यंजित करती है। साथ ही उसमें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तिरित होते–होते नवीनता को ग्रहण करती हुई मौलिक रूप में निहित होती है।

ऐतिहासिक महत्व– लोक कला सम्बन्ध मानव जीवन के प्रारम्भ से लेकर हमारे पूर्वजों के काल खण्ड के साथ–साथ हमारे वर्तमान से भी जुड़ा हुआ है। आज का मानव तब के मानव की ही तरह है, क्योंकि आज का मानव अपनी संस्कृति एवं सभ्यता के उन्नत रूप एवं आधुनिकता के साथ पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ है।

प्राचीन काल का मनुष्य असभ्य रूप से रहकर भी उस समय की परिस्थितियों के अनुसार ही अपना जीवन–यापन करता था। नदियों का पानी पीना, कन्दमूल फल खाना और धीरे–धीरे शिकार करने हेतु पत्थर के नुकीले हथियारों का आविष्कार एवं आग का भी आविष्कार होने से (पहले कच्चा मांस खाना) मांस को आग में भूनकर खाने लगा। उस समय मानव का निवास प्रकृति प्रदत्त गुफाओं में था। इससे पहले वह अकेले या झुंड बनाकर रहता था।

जब मानव ने गुफाओं में स्थाई रूप से रहना शुरू किया तो उसने अपने आस–पास की दीवारों एवं छोटी–छोटी शिलाओं पर चित्रकारी भी शुरू की तथा छोटे–छोटे चित्रों का चित्रण किया। प्राकृतिक रंगों से उनमें रंग भी भरने लगा। इस प्रकार इन प्राचीन चित्रों के अध्ययन से आदिमानव की कला के प्रति रूचि का पता चलता है। इसी कला को आदिम कला भी कहा जाता है। प्राचीन काल मं लोक गाथाओं से सम्बन्धित चित्र भी प्राप्त होते हैं, जिनमें दक्षिण भारत के लोक देवता, उत्तरी भारत के लोक देवता तथा राजस्थान तथा अन्य राज्यों के लोक देवता प्रमुख है।

लोक कला भारत के लगभग हर घर एवं समाज तथा जनमानस की परम्परागत महत्व बहुत अधिक है। आज के समय में इसका प्रचार–प्रसार प्रत्येक राज्य में लोक–पर्वों के माध्यम से किया जा रहा है।

लोक कलाओं का आदि मानव से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। आदिमानव ने प्रकृति की शक्तियों से प्रेरित होकर उनका सरल भाव से दैवीय शक्तियों के रूप में चित्रण किया है। लोक कला हमारे समाज में आदिकाल से ही विद्यमान हैं, जो आज भी निरन्तर गति से चल रही हैं। प्राचीन गुफाओं में स्वास्तिक एवं चौखुटे खाने कुण्डली चिन्ह तथा हाथ के छापों के साथ–साथ अनेक इस प्रकार के चिन्हों का चित्रण किया गया है।

आज की आधुनिक लोक कला आदि काल की कला का ही एक परम्परागत रूप, विकसित रूप है। कलाओं की उन्नति एवं विकास में लोक कला का बहुत बड़ा महत्व है। लोक कला दैवीय रूपों एवं प्रतीकों तथा परम्परागत विश्वासों पर आधारित है, तो दूसरी ओर यह सामाजिक पक्ष के रीति–रिवाजों तथा परम्पराओं पर आधारित भी है। लोक कला में विभिन्न प्राकृतिक शक्तियों एवं देवी–देवताओं का परम्परागत महत्व होने के कारण उसमें प्रतीकात्मक रूपों का अंकन व चित्रण प्रधान होता है। कोई भी संस्कार एवं पूजा–अर्चना तथा शुभ कार्य इनके बिना पूरा नहीं होता है।

लोक कला मानव विकास के इतिहास में एक ओर आदिम कला तो दूसरी ओर सु–संस्कृत कला के मध्य रही है। बदले हुए परिवेश में मानव की संवेदनाओं में भी बदलाव आता जा रहा है। ग्रामीण जीवन में भी व्यवसायिकता, उपयोगिता, बौद्धिकता में बदलाव आ रहा है। लोक मानव द्वारा समस्त कला जो स्वयं की सुखानुभूति के लिए की जाये वह लोक कला के अन्तर्गत आती है।

विषय–वस्तु– लोक कला कोई साधारण विषय नहीं है। इसके अपने आधार और कथाएँ होती हैं। ग्राम्य परिवेश और लोक संस्कृति में व्याप्त रचनात्मक आचार व्यवहार कला तत्व के रूप में परिणत होकर लोक कलाओं को समृद्ध भी करते हैं। परम्परागत तौर पर लोक कला क्षेत्र अथवा समुदाय विशेष के लोगों द्वारा किया गया वह कला कर्म है, जिसकी विषय वस्तु काफी व्यापक है।

भारत वर्ष में लोक कला का विकास सबसे अधिक हुआ है। भारत में यह विकास प्राचीन परम्परा के साथ आज आधुनिक समय में भी निरन्तर चला आ रहा है। भारत के प्रत्येक राज्य में लोक कलाओं का अबाध गति से विकास हुआ है, जिसकी विषय–वस्तु अपने–अपने परिवेश के अनुरूप अलग–अलग है। विभिन्न त्यौहारों और धार्मिक उत्सवों के लिए उनमें अनेक कलात्मक स्वरूप दिखाई पड़ते हैं, जो लोक कला वाली सांस्कृतिक भावना का प्रतीक होती है। लोक कला आकार, मिट्टी, दीवार, कागज, लकड़ी तथा विभिन्न धातुओं के बनाए जाते हैं।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

हमारी प्राचीन मान्यताओं के आधार पर अनेक प्रकार के उपकरण, सामान आदि लोक कला के अनुसार बनाए जाते हैं। लोक कला का विषय बहुत व्यापक है। ऐसे भी उदाहरण भी मिलते हैं, जहां एक ही लक्ष्य के अलग–अलग आकार बनाए जाते हैं। लोक कला आयामों पर भिन्न–भिन्न प्रान्तों का एवं जातियों, धर्मों की अलग–अलग प्रवृत्तियां दिखाई देती हैं। लोक कला के माध्यमों को बनाने में भी विभिन्नता दिखाई देती है। इनके लिए अलग–अलग प्रदेशों में अलग–अलग आकारों को महत्व दिया जाता है। जैसे– राजस्थान व उत्तर प्रदेश के ग्रामीण घरों की दीवारों पर हाथी, घोड़े, तलवार व देवी–देवताओं, ओम स्वास्तिक चिन्ह आदि लोक परम्परा के विचार से बनाए जाते हैं।

लोक चित्रों की विषय–वस्तु धार्मिक पारम्परिक, सामूहिक एवं सामाजिक चित्रों में धार्मिक विचारों रीति–रिवाजों की प्रधानता रहती है। यही लोक कला की विषय–वस्तु की सबसे बड़ी विशेषता है।

लोक परम्परा– भारतीय परम्परा में लोक परम्परा से जुड़ा कुम्हार जहां ग्रामवासियों के मिट्टी के बर्तन, देवी–देवताओं की मूर्तियां, लक्ष्मी–गणेश, गुड़िया, हाथी, मोर, दिया (दीपक) आदि बनाता था, वही आवश्यकता के आधार पर कुम्हार अपने शिल्प में नए प्रयोग करने आरम्भ कर दिये हैं तथा प्राचीन परम्परा को आधुनिक परिवेश में ढाला है।

प्राचीन परम्पराए वं सभ्यता हमारी लोक कलाओं का संस्कार है। परम्पराएं पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तान्तिरित होती हैं। लोक चित्र इसके उदाहरण हैं। प्रत्येक लोक चित्र, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक तथा पारम्परिक भावों का दर्शनीय रूप रहा है। इनमें कोई भेद–भाव नहीं होता, चाहे कोई निर्धन हो या धनवान लोक कला सभी के घरों की भूमि, भित्ति को एक जैसे सजाते व संवारते हैं।

आधुनिक काल में विभिन्न शुभ अवसरों व त्यौहारों के अवसर पर बनाए जाने वाले रूप हैं एवं भित्तिचित्र व लोक चित्र लोक कला के रूप में पाये जाते हैं। ये भित्तिचित्र व लोक चित्र मानव के जन्म के पूर्व से प्रारम्भ हो जाते हैं और सम्पूर्ण जीवन काल तक अनेक संस्कारों के रूप में जुड़े रहते हैं।

लोक कला ने अपना विकास हुई क्षेत्रों में किया है जिसका एक रूप परम्परागत विश्वासों, संकेतों एवं संस्कारों पर आधारित है एवं दूसरे रूप में समाज के रीति–रिवाजों का इस कला पर जो प्रभाव पड़ा उसका चित्रण है। साथ ही इसमें कलाकारों की अनुभूतियों की स्वतंत्रता भी हमें देाने को मिलती है। लोक कला पारम्परिक भावों के सौन्दर्य का आकर्षण है।

भारत की लोक संस्कृति– भारतीय लोग संस्कृति में लोक कला का सम्बन्ध बहुत पुराना है। लोक कला लोक संस्कृति जगत के अन्तर्गत ही आती है। लोक कला का हमारे संस्कारों, रीति–रिवाजों, प्राचीन मान्यताओं, प्रवृत्तियों, लोक पर्वों आदि के साथ पुराना सम्बन्ध है। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक लोक कला के आयाम जुड़े हुए होते हैं। यद्यपि आज सभ्यता के उत्थान और अनेक अविष्कारों के कारण हमारे आचार–विचार और संस्कृति में काफी हद बदलाव आ चुका है। लोक कला हमारे देश की एक महत्वपूर्ण कला है। लोक जीवन विस्मृति और आत्मसुख का एकमात्र साधन है। अतः इसकी परिलक्षणता का स्वरूप लोक कला है। हमारे तीज–त्यौहारों एवं संस्कारों आदि पर अनेक चित्र मूर्ति, अल्पना, रंगोली आदि के ऐसे आकार बनते हैं जो लोक की अमानत माने जाते हैं। मनुष्य के जन्म, मुण्डन, विवाह, नामकरण संस्कार से लेकर जीवन के अन्तिम संस्कार आदि की प्रगति में लोक कला आकारों का अपना अर्थ होता है। तमाम ऐसे उत्सव होते हैं, जहां मनोरंजन व अलंकरण के चित्र, मूर्ति, पुतले, खिलौने आदि लोक कला आकारों के बनाए जाते हैं।

प्रान्तीय कला– हमारे देश भारत में पृथ्वी को धरती माता कहकर उसकी पूजा की जाती है। अपनी धरती माँ के प्रति भक्ति भावना से प्रेरित होकर लोक मानव ने पृथ्वी का श्रृंगार तथा अलंकरण करके धरती माँ के प्रति अपनी श्रद्धा को प्रदर्शित किया है। भारत देश के भिन्न–भिन्न प्रान्तों में अलग–अलग नामों से धरती माता को अलंकृत करने का काम किया जाता है। जैसे– गुजरात में 'साथिया', राजस्था में 'माण्डना' महाराष्ट्र में 'रंगोली', उत्तर प्रदेश में 'चौक पूरना', बिहार में 'अहपन', बंगाल में 'अल्पना', उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र या पहाड़ी क्षेत्र में 'आपना' उड़ीसा में 'चीता–जोटी' इसके अलावा दक्षिण भारत में धरती माँ को विभिन्न आलेखनों के द्वारा सजाने के काम को कोलम के नाम से पुकारते हैं।

भारतीय उपखण्ड में रामायण एवं महाभारत की पौराणिक गाथाओं का नाट्य पूर्ण लोक कला मंचन की प्राचीन परम्परा रही है। चित्रकर्त्ता, कठपुतली, एकल पात्र, नाट्य गान, महाराष्ट्र में कीर्तन उत्तरी भारत में रामलीला का मंचन होता आ रहा है। लोक कला में सौन्दर्य का आकर्षण, संगीत और नृत्य की माधुर्य और लय चित्रकला की अभिव्यक्ति मानव की सुन्दरतम् भावनाओं को सदैव अपनी ओर आकर्षित किए रहती है। किसी भी देश/प्रदेश की जन–कला वहां के जनसामान्य के ह्रदय को छू लेती है।

धरती की इन अलंकरण विधियों में विभिन्न रंगों से या उनके चूर्ण से भूमि पर, घर के आंगन, कक्ष के फर्श, पूजा के स्थान या गृह द्वार पर आलेखन किया जाता है। यह कार्य परम्परागत रूप से प्रचलित एक लोक शैली है, जिसका मुख्य ध्येय

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

भूमि को रंगों से सजाकर सौंदर्य एवं आकर्षण प्रदान करना है। भारत वर्ष में हर क्षेत्र तथा घर में धरती को अलंकृत करने के लिए इसी प्रकार के आलेखन बनाए जाते हैं। रंगोली सजाना, चौक पूरना या अपना और कोलम लगाना धार्मिक भाव से प्रेरित होता है, जिसमें आदर एवं श्रृद्धा से आलेखन रचना की जाती है। इन आलेखनों का उद्देश्य आकर्षक तथा सुन्दर ढंग से धरती पर अलंकरण बनाकर आध्यात्मिक दृष्टि से पारलौकिक शक्तियों की पूजा आराधना करना होता है।

महाराष्ट्र में रंगोली के द्वारा धरती का अलंकरण अनेक रंगों के चूर्ण को धरती पर आलेखन के रूप में बिखेर कर किया जाता है। राजस्थान में विशेष अवसरों पर धरती, दीवारों, छतों, मेहराबों तथा चौक में तरह–तरह के आलेखन बनाए जाते हैं, जिसे 'माण्डना' कहते हैं। बंगाल में त्यौहारों में, विवाह में, उत्सवों आदि के अवसर पर 'अल्पना' बनाई जाती है। अल्पना का घरों की लिपि–पुती भूमि पर तथा दीवारों पर गीले सफेद रंग से रेखांकन किया जाता है। इसके बाद उसमें विभिन्न ज्यामितीय अभिप्राय वृत्त, चतुर्भुज, त्रिभुज, षट्कोण, अष्टकोण आदि बनाकर रेखाएँ डालकर रंगों से भरे जाते हैं।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, उत्तराखण्ड आदि राज्यों में अपनी–अपनी लोक कलाएँ प्रसिद्ध हैं, जो हमारे धार्मिक, रीति–रिवाज त्यौहारों को एक नई दिशा प्रदान करती है। पट्ट चित्रकला यह उड़ीसा की पारम्परिक चित्र कला है। इस कला में सुभद्रा, बलराम, भगवान, जगन्नाथ, दशावतार और कृष्ण के जीवन से सम्बन्धित है। बली कला महाराष्ट्र के जन जातीय प्रदेश में रहने वाले जनजातीय वर्ग से है। ये अलंकृत चित्र गोंड तथा कोल जैसे जनजातीय घरों और पूजा घरों के फर्शों और दीवारों पर बनाए जाते हैं। वृक्ष–पक्षी, नर–नारी मिलकर वर्ली चित्र को पूर्णता प्रदान करते हैं। ये चित्र शुभ अवसरों पर महिलाओं द्वारा मिलकर बनाए जाते हैं। वर्ली जीवन शैली की झॉकी सरल आकृतियों में खूबसूरती से प्रस्तुत की जाती है। थंका कला भगवान बुद्ध के जीवन और उनकी शिक्षाओं पर आधारित कला को थंका चित्र कहा कहते हैं। यह कला भारतीय, नेपाली तथा तिब्बती संस्कृति एवं दार्शनिक मूल्यों एवं धर्म को अभिव्यक्त करती रही है।

मधुबनी कला–मिथिला आँचल क्षेत्र जैसे– बिहार के दरभंगा, मधुबनी एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों की प्रमुख कला है। मधुबनी के जिवधारपुर गाँव इस लोक कला का प्रमुख केन्द्र है। इस कला में खासतौर पर 'कुल देवता' का चित्रण होता है। हिन्दू देवी–देवताओं की तस्वीर एवं प्राकृतिक दृश्य जैसे– सूर्य व चन्द्रमा, धार्मिक पेड़–पौधे जैसे– तुलसी पीपल तथा विवाह के दृश्य देखने को मिलते हैं। मधुबनी कला दो प्रकार की होती है। भित्ति चित्रण और अल्पना।

इसके अलावा अनेक कलाएँ जो लोक चित्र कला को प्रकाशवान कर रही हैं, उनमें– तंजौर कला, पिथौरा कला, कलमकारी कला, फर्श कला आदि। ये सभी कलाएँ लोक चित्र या लोक कलाएँ कहलाते हैं। जो लोक चित्र कला का केन्द्र रही हैं।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

निष्कर्ष– अन्त में हम कह सकते हैं कि भारतीय लोक कला प्राचीन परम्परा से अब तक निरन्तर चली आ रही कला का स्वरूप विश्वस्तरीय है। विश्व में भारतीय लोक कला को श्रेष्ठ माना गया है। लोक कला राष्ट्र की निधि होती है। लोक कलाएँ शास्त्रीय कलाओं का आधार तत्व रही है। शास्त्रीय कलाओं का विकास लोक कलाओं की कृमिक विकास की परिणति रही है। लोक कला शाश्वत है उसकी कला का कभी लोप नहीं होता। लोक कला विकास एवं संसार अनेक विधाओं में देखा जा सकता है। लोक कला दैवी रूपों एवं प्रतीकों तथा परम्परागत विश्वासों पर आधारित है। आज की कला को शक्ति देने के लिए परम्परागत कला आधुनिक कलाकारों को गति देने का महान कार्य करती आ रही है।

REFERENCES

1. भारतीय चित्र कला का इतिहास– डॉ० आर०एस० अग्रवाल।
2. भारतीय चित्र कला का इतिहास, प्रकरण बुक डिपो बरेली– अविनाश बहादुर शर्मा।
3. कला और आधुनिक प्रवृत्तियां– रामचन्द्र शुक्ल।
4. कला और कलम– डॉ० गिरिराज किशोर अग्रवाल।
5. चित्रकला एवं लोक कला– डॉ० शेखर चन्द्र जोशी।
6. कला एवं तकनीक– डॉ० अविनाश बहादुर वर्मा।
7. www.google/Lok Kala Painting.

*****